

कॉलेजों में प्रोफेसर-छात्रों की हाजिरी के लिये आगा जियो फेंसिंग सिस्टम

चर्चा में क्यों?

14 दिसंबर, 2022 को उत्तराखण्ड के उच्च शिक्षा एवं सूचना प्रौद्योगिकी सचिव शैलेश बगोली ने बताया कि प्रदेश के दूर दराज के पर्वतीय इलाकों के डगिरी कॉलेजों में शकिषकों और छात्रों की पहुँच सुनिश्चित करने के लिये जियो फेंसिंग हाजिरी सिस्टम लागू होगा। भविष्य में यह व्यवस्था पूरे प्रदेश में लागू हो जाएगी।

प्रमुख बिंदु

- सचिव शैलेश बगोली ने बताया कि प्रदेश के कुछ कॉलेजों में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर इसकी शुरुआत की जा रही है। जियो फेंसिंग हाजिरी से मॉनिटरिंग आसान हो जाएगी। पायलट सफल रहा तो प्रदेशभर में इसे लागू किया जाएगा।
- वदिति है कि इससे पहले परिवहन नगिम अपने सभी बस अडननें पर इसे लागू कर चुका है, जिसके तहत बस अड्डे की जियो फेंसिंग की गई है।
- दरअसल, प्रदेश के तमाम दुर्गम इलाकों के डगिरी कॉलेज ऐसे हैं, जहाँ शकिषकों और छात्रों की उपस्थिति का आँकड़ा काफी कमतर रहता है। महीने में कुछ दिन जाकर शकिषक अपनी हाजिरी पूरी कर लेते हैं। इस समस्या का समाधान करने के लिये ही जियो फेंसिंग हाजिरी सिस्टम लागू करने की तैयारी शुरु की गई है।
- उच्च शिक्षा वभिग, सूचना प्रौद्योगिकी वभिग के साथ मलिकर इस दशा में काम करने जा रहा है। इसके तहत जो भी शकिषक या छात्र कॉलेज परसिर में प्रवेश करेगा तो उसके मोबाइल से ही उसकी हाजिरी लग जाएगी। इसके लिये मोबाइल जियो फेंसिंग के दायरे में आना जरूरी है।
- जब कोई छात्र या शकिषक अपने मोबाइल के साथ कैंपस में प्रवेश करेंगे तो उन्हें इसमें डाउनलोड किया गया हाजिरी का ऐप खोलना होगा। यह ऐप केवल कॉलेज के भीतर यानी जियो फेंसिंग दायरे में आने पर ही काम करेगा। इस ऐप को खोलने के बाद उनके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर एक ओटीपी आएगा। इसे फीड करेंगे तो ही हाजिरी लग जाएगी और जैसे ही छात्र, शकिषक उस कैंपस से बाहर जाएंगे, उनका रिकॉर्ड स्वतः ही अपडेट हो जाएगा।
- उल्लेखनीय है कि जियो फेंसिंग सैटेलाइट आधारित प्रणाली है, जिसमें एक विशेष क्षेत्र की जियो फेंसिंग यानी बाउंडरी बना दी जाती है। इस दायरे में जो भी डविइस आएगी, वह रिकॉर्ड में आ जाएगी। जियो फेंसिंग के भीतर आने पर ही मोबाइल का वह ऐप काम करेगा जो कि इससे संबंधित होता है।